UNIVERSITY OF CAMBRIDGE INTERNATIONAL EXAMINATIONS
International General Certificate of Secondary Education

CANDIDATE NAME	

CENTRE NUMBER		CANDIDATE NUMBER	

5420982356

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/01**

Paper 1 Reading and Writing **May/June 2013**

2 hours

Candidates answer on the Question Paper.

No Additional Materials are required.

READ THESE INSTRUCTIONS FIRST

Write your Centre number, candidate number and name on all the work you hand in.
Write in dark blue or black pen.
Do not use staples, paper clips, highlighters, glue or correction fluid.
DO **NOT** WRITE IN ANY BARCODES.

Answer **all** questions.

At the end of the examination, fasten all your work securely together.
The number of marks is given in brackets [ ] at the end of each question or part question.

For Examiner's Use	
Section 1	
Section 2	
Total	

This document consists of **13** printed pages and **3** blank pages.

DC (AC/JF) 66949/5
© UCLES 2013

UNIVERSITY of CAMBRIDGE International Examinations

[Turn over

खंड 1

अभ्यास 1 प्रश्न 1–6

'तारों का जादूगर महागुरु राजू' पर निम्नलिखित आलेख पढ़िए तथा दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

दुकान क्या है, एक झोली में समा जाए बस इतने ही खिलौने हैं उनके पास, लेकिन इनकी विशेषता है कि ये अल्युमिनियम के तारों से बनाए जाते हैं। गुजरात के कच्छ इलाक़े से आए राजू अपना असली नाम नहीं बताते और कहते हैं कि उन्हें लोग महागुरु राजू के नाम से जानते हैं। वह कहते हैं, "आप बोलिए जो बनावट या रूप बनाना है आपके सामने बना दूंगा। एक तार को मोड़ मोड़ कर आपका चेहरा बना दूंगा। यही मेरी कला है।"
अल्युमिनियम के एक ही तार को मोड़ कर राजू, साइकिल, रिक्शा, बुद्ध की मूर्ति और न जाने क्या क्या बना लेते हैं।

राजू 35 वर्ष पहले लखनऊ आए और फ़ुटपाथ पर ही घूमते फिरते अल्युमिनियम का काम सीखा। वह कहते हैं, "इधर एक फ़ौजी अंकल हुआ करते थे जो तारों का काम करते थे। उन्हें मैंने टीवी पर भी देखा है। मैं उनको चाय देता था और बदले में काम सीखता था।" लेकिन यही काम क्यों? राजू कहते हैं, "असल में मुझे फ़िल्म देखने का शौक था और उसके लिए पैसे चाहिए होते थे। फ़ौजी अंकल कुछ पैसे देते थे तो फ़िल्म देखता था।"

राजू सिकंदर आर्ट गैलरी के पास बैठकर खिलौने बेचता है और उनके ग्राहकों में कई विदेशी भी शामिल हैं। वह बताते हैं, "मुझे सबसे बड़ा आर्डर जर्मनी के एक व्यक्ति ने दिया था एक हज़ार साइकिल बनाने का। उसमें मैंने पैसा बनाया लेकिन मुझे अपने माता पिता को पैसे भेजने होते हैं।"

राजू के डिजाइन कई बड़े कलाकार भी खरीदते हैं। राजू बताते हैं कि उनके पास नामी गिरामी चित्रकार भी आया करते थे। राजू दावा करते हैं कि उन्होंने लखनऊ के बगीचों में और चौराहों पर लगी कई मूर्तियों को भी आकार दिया है। लेकिन वह इस बात का बुरा नहीं मानते कि उन्हें इसका कोई श्रेय नहीं मिलता। वह कहते हैं, "हम तो ग़रीब आदमी हैं। कला आती है लेकिन हमारे संबंध वैसे नहीं हैं। मुझसे कई कलाकार आकर कृतियां बनवाते हैं और अच्छे पैसे देते हैं। मैं इसमें खुश हूं।" सिकंदर आर्ट गैलरी के पास तारों का यह जादूगर बैठे बैठे कई कलाकृतियों को अंजाम दे देता है। कला उसके लिए मायने रखती है लेकिन मशहूर होना उसकी प्राथमिकता नहीं है। महागुरु राजू की ज़रुरत रोटी है और वह फ़ुटपाथ पर अपनी कला बेचकर मिलने वाली रोटी से खुश रहते हैं।

© UCLES 2013

1 राजू खिलौने बनाने के लिए किस वस्तु का प्रयोग करते हैं?

.... [1]

2 खिलौने बनाने का काम सीखने के बदले राजू फ़ौजी अंकल को क्या देते थे?

.... [1]

3 फ़ौजी अंकल से मिले पैसों का राजू क्या करते थे?

.... [1]

4 राजू को सबसे बड़ा आर्डर किस से मिला?

.... [1]

5 राजू द्वारा डिजाइन की गई मूर्त्तियां लखनऊ में कहां-कहां देखी जा सकती हैं?

.... [1]

6 राजू की प्रमुख आवश्यकता क्या है?

.... [1]

[अंक: 6]

अभ्यास 2 प्रश्न 7

अंतर्राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव में भाग लेकर दुनिया के महान कलाकारों से मिलने के दुर्लभ अवसर का लाभ उठाइए

नाट्य महोत्सव कार्यक्रम
नाट्य विद्यालय, बैंगलोर।
दूरभाष 0878452345, 0876089347

तेरह दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव में स्वंयसेवी सदस्य बनने के लिए आवेदन

इस वर्ष का अंतर्राष्ट्रीय नाट्य उत्सव, जो बैंगलोर में होगा, उसके लिए नाट्य विद्यालय स्वंयसेवियों का चयन कर रहा है। सभी स्वंयसेवी सदस्यों को दुनिया के कई बड़े कलाकारों के साथ मिलने का अवसर मिलेगा और वे सभी नाटक भी देख पाएंगे। साथ ही वे कलाकारों द्वारा आयोजित दो दिवसीय अभिनय कार्यशाला में भी शामिल हो सकेंगे, जो उत्सव के अंतिम सप्ताहांत में आयोजित की जाएगी। यदि आप इसके लिए आवेदन करना चाहते हैं तो कृपया आवेदन पत्र के लिए सम्पर्क करें।

सलीम रिज़वी की उम्र 14 वर्ष है। उसे अभिनय में विशेष रूचि है। सलीम रिज़वी पिछले 4 वर्षों से अभिनय का प्रशिक्षण ले रहा है। वह अब तक 5 मंच नाटक भी कर चुका है। साथ ही वह हारमोनियम बजाना जानता है। भविष्य में वह अभिनेता बनना चाहता है। जबकि सलीम के माताजी और पिताजी चाहते हैं कि वह पढ़ाई के बाद डाक्टर बने। सलीम ने नाट्य उत्सव के बारे में कई दिलचस्प बातें सुनी हैं इसलिए वह इस उत्सव में हिस्सा लेना चाहता है। क्योंकि सलीम सोमवार से शुक्रवार तक स्कूल जाता है इसलिए वह सप्ताहांत के दौरान ही कोई दूसरा काम कर सकता है। सलीम के माता पिता चाहते हैं कि उसे 9 बजे तक घर ज़रूर लौटना चाहिए। सलीम ने अपने ई-मेल द्वारा आवेदन पत्र मंगवाया है। उसका ईमेल पता है - sr201@yahoo.co.uk वह बैंगलोर के कला अपार्टमेंट के फ्लैट न. 212 में रहता है। उसका टेलिफोन न. 0823696658 है।

आप अपने को सलीम रिज़वी मानकर नीचे दिए गए आवेदन पत्र को भरिए।

नाट्य महोत्सव कार्यक्रम, नाट्य विद्यालय, बैंगलोर।

दूरभाष 0878452345, 0876089347

आवेदक का नाम....*सलीम रिज़वी* ....

(सही का निशान लगाएं) आयु - 14–15 ☐ 16–17 ☐ 18–19 ☐

ईमेल - ....

पूरा पता - ....

..

निम्नलिखित विकल्पों के माध्यम से बताइए कि आप कब उपलब्ध हैं। [कोष्ठक में सही का निशान लगाएं]

☐ **सप्ताह के दौरान।**

☐ **सप्ताहांत में।**

निम्नलिखित अवधियों में से उचित अवधि चुनें। [कोष्ठक में सही का निशान लगाएं]

☐ **सुबह 8 बजे से 4 बजे तक**

☐ **दोपहर 3 बजे से रात 11 बजे तक**

अभिनय संबंधी अनुभव बताइए

....

....

....

[अंक:7]

अभ्यास 3 प्रश्न 8–10

'ये शैतान बच्चे' शीर्षक से निम्नलिखित लेख पढ़िए।

अगले पृष्ठ पर दिए गए कार्य को निर्देशानुसार पूरा कीजिए।

ये शैतान बच्चे

जैसे हाथ की पांचों अंगुलियां एक बराबर नहीं होती वैसे ही सभी बच्चों का स्वभाव भी एक समान नहीं होता। कोई बच्चा शांत स्वभाव वाला होता है तो कोई इसके एकदम विपरीत गुस्सैल और उद्दंड होता है। उनको ऐसा बनाने में उनके परिवार और आस पास के माहौल का बड़ा योगदान होता है। बेहतर परिस्थितियां मिलने पर बच्चे का व्यक्तित्व शांत और सुदृढ़ बनता है। जबकि ठीक इसके विपरीत परिस्थितियां बच्चों को गुस्सैल और अनुशासनहीन बनाती हैं। ऐसे बच्चे माता-पिता के लिए निरंतर चिंता का कारण होते हैं। उनके स्वभाव में आपस में लड़ाई झगड़ा करना और किसी की न सुनना उनकी आदत बन जाती है। साथ ही माता पिता से यही अपेक्षा करना कि वे उनकी हर जायज़ और नाजायज़ ज़रूरतों को पूरा करेंगे। यही आदतें उन्हें स्वार्थी बनाती हैं। यानी कुल मिला कर माता-पिता व परिवार को निरंतर तनाव में रखना।

वैसे तो थोड़ी बहुत अनुशासनहीनता हर बच्चे में होती है लेकिन शुरु से ही माता पिता के सतर्क एवं अनुशासनपूर्ण बर्ताव से इसको सुधारा जा सकता है। मगर मुश्किल तब होती है जब माता पिता इस समस्या को सुलझाते नहीं और नज़रअंदाज़ करते जाते हैं। कभी-कभी माता-पिता अपने बच्चों को पर्याप्त समय देने के बजाय उन्हें तरह-तरह की चीज़ों से फुसलाने की कोशिश करते हैं। ऐसे में बच्चों में यह भावना पैदा हो जाए कि अपने माता-पिता के लिए वह ही सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण हैं तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। उनके अंदर एक ख़ास किस्म की अहम की भावना पनपने लगती है। आगे चल कर यही भावना उनके अच्छे नागरिक बनने के मार्ग में बाधा बनती है।

बच्चों के व्यवहार पर काम कर रहे अनेक विशेषज्ञों के अनुसार, हमें बच्चों के व्यवहार पर ध्यान रखने की ज़रूरत तभी से होती है जब वे बहुत छोटे होते हैं। क्योंकि घर बच्चों की पहली पाठशाला है और माता-पिता उसके पहले शिक्षक। कुछ अन्य विशेषज्ञों का ख़्याल है कि इसके लिए उन्हें कुछ नियम बनाने चाहिए जैसेकि बच्चों के साथ मिल बैठकर नियमित समय पर टेलिविज़न देखना। उसका समय तय करें और उस समय उनके साथ ही बैठें।

अभ्यास 3 प्रश्न 8–10

आपके स्कूल में एक भाषण प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। प्रतियोगिता का विषय है कि क्या सचमुच बच्चों में अनुशासनहीनता बढ़ रही है? ये शैतान बच्चे नामक लेख में से नीचे दिए गए प्रत्येक शीर्षक के अंतर्गत नोट लिखें जिसपर आपका भाषण आधारित होगा।

8 कौन सी आदतें परिवारों में निरंतर तनाव पैदा करती हैं? कोई **तीन** आदतें बताइए।

- .... [1]
- .... [1]
- .... [1]

9 माता-पिता का क्या न करना बच्चों में विशेष अहम की भावना पैदा करता है।

- .... [1]
- .... [1]

10 बच्चों के व्यवहार को सही दिशा देने के बारे में विशेषज्ञों की क्या राय है?

- .... [1]
- .... [1]

[अंक:7]

अभ्यास 4 प्रश्न –11

निम्नलिखित आलेख के आधार पर सारांश लिखिए जिसके द्वारा 'मैती आंदोलन' के विकास और प्रभाव संबंधी बातें शामिल की जा सकें।

आपका सारांश 100 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

संगत बिन्दुओं के समावेश के लिए 6 अंक और भाषिक अभिव्यक्ति के लिए 4 अंक निर्धारित हैं। पाठांश से वाक्य उतारना उचित नहीं है।

उपहार में मिली हरियाली

"पैसे दे दो, जूते ले लो" इस गीत के बोल चाहे जिस तरह के भी हों, विवाह के अवसर पर दूल्हे के जूते चुराकर नेग लेने की परंपरा बहुत पुरानी है। लेकिन उत्तर भारत की लड़कियों ने शादी के लिए आए दूल्हों के जूते चुरा कर उनसे नेग लेने के रिवाज को बदल दिया है। वे अब दूल्हों के जूते नहीं चुराती बल्कि उनसे अपने मैत यानी मायके में पेड़ लगवाती हैं। वन संरक्षण की इस नई रस्म को मैती आंदोलन का नाम दिया गया है। इसकी चर्चा देश भर में हो रही है।

अब यह आंदोलन उत्तराखंड सहित भारत के आठ राज्यों में भी अपनी जड़ें जमा चुका है। चार राज्यों में तो वहां की पाठ्य पुस्तकों में भी इस आंदोलन की गाथा को स्थान दिया गया है। कनाडा में मैती आंदोलन की ख़बर पढ़ कर वहां की पूर्व प्रधानमंत्री फ्लोरा डोनल्ड आंदोलन के प्रवर्तक कल्याण सिंह रावत से मिलने गोचर आ गईं। वे मैती परंपरा से इतना प्रभावित हुई कि उन्होंने इसका कनाडा में प्रचार-प्रसार शुरु कर दिया। अब वहां भी विवाह के मौक़े पर पेड़ लगाए जाने लगे हैं। मैती परंपरा से प्रभावित होकर कनाडा सहित अमेरिका, ऑस्ट्रिया, नार्वे, चीन, थाईलैंड और नेपाल में भी विवाह के मौके पर पेड़ लगाए जाने लगे हैं।

मैती आंदोलन की भावनाओं से प्रेरित होकर अब लोग जहां पेड़ लगा रहे हैं वहीं उनके व्यवहार भी बदल रहे हैं। पर्यावरण के प्रति उनकी सोच में भी परिवर्तन आ रहा है। यही वजह है कि अब लोग अपने आसपास के जंगलों को बचाने और इनके संवर्धन में भी सहयोग देने लगे हैं। इस आंदोलन के कारण पहाड़ों पर काफ़ी हरियाली दिखने लगी है और सरकारों को अब अपने वृक्षारोपण कार्यक्रम के बारे में सोचने पर विवश कर दिया है।

पर्यावरण संरक्षण के लगातार बढ़ते इस अभियान को अपनी परिकल्पना और संकल्प से जन्म देने वाले कल्याण सिंह रावत ने कभी सोचा भी नहीं था कि उनकी प्रेरणा से उत्तराखंड के एक गांव से शुरु हुआ यह अभियान एक विराट और स्वयं स्फूर्त आंदोलन में बदल जाएगा।

'मैती आंदोलन' का विकास और प्रभाव

[अंक: 10]

खंड 2

अभ्यास 5 प्रश्न 12–18

निम्नलिखित आलेख को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

स्वाद क़ायम है पराँठे वाली गली का

दिल्ली के चाँदनी चौक इलाक़े में कई मशहूर गलियाँ और कूचे हैं। हर एक सँकरी गली अपनी एक ख़ास पहचान लिए हुए है। इन्हीं में एक है मशहूर 'पराँठे वाली गली' जिसकी चर्चा देश-विदेश हर जगह सुनी जा सकती है। लेकिन एक समय अपने पराँठों के लिए जानी-पहचानी इस गली में अब बड़ा अंतर आ चुका है। समय के चक्र और व्यवसायिकता की दौड़ में पराँठे वाली गली अपनी मौलिकता खो चुकी है। सैकड़ों वर्षों से मशहूर इस गली में कभी लगभग सभी दुकानें पराँठे की हुआ करतीं थीं। लेकिन आज स्थिति ये है कि इस पराँठे वाली गली में सिर्फ़ तीन दुकानें पराँठे की हैं। बाक़ी की दुकानें साड़ियों और कपड़ों की दुकानों में परिवर्तित हो चुकी हैं।

आज जो तीन पराँठे की दुकानें आपको इस गली में मिल जाएँगी वे लगभग 100 साल से भी ज़्यादा पुरानी हैं। इन दुकानों के मालिकों की पाँचवीं पीढ़ी के लोग इन दुकानों को चला रहे हैं। इन दुकानों में इंदिरा गाँधी, जवाहर लाल नेहरू जैसे बड़े नेताओं की भोजन करते हुए तस्वीरें लगी हैं। जो किसी ज़माने में इनकी महत्ता का आभास दिलाती हैं। अभी भी इन तस्वीरों की छाया में यहाँ बड़ी संख्या में लोग पराँठे खाने आते हैं। इनमें बड़ी संख्या में विदेशी सैलानी भी होते हैं।

दिल्ली के उपनगर गुड़गाँव से परांठे का मज़ा लेने आए वरुण जैन कहते हैं, "भीड़-भाड़ वाली इस गली में राह चलते ढेरों लोगों के बीच पराँठे खाने का एक अलग अनुभव है।" वरुण मानते हैं कि पाँच सितारा होटलों में भी उन्हें कभी ऐसा स्वाद चखने को नहीं मिला। परांठे की शौकीन श्रुति का कहना था, "पित्ज़ा और बर्गर अपनी जगह हैं लेकिन वे इस गली के आकर्षण के साथ मुक़ाबला नहीं कर सकते।" पत्तलों की जगह अब स्टील की प्लेटों ने ले ली है। लेकिन जो चीज़ नहीं बदली है वह शुद्धता की गारंटी है जिसका दावा ये दुकानदार अभी भी करते हैं। फ़ास्ट फ़ूड की दुकानों से मुक़ाबले की बात दुकानदार रमेश चंद्र शर्मा नहीं मानते हैं। वे कहते हैं, "हमारा मुक़ाबला केवल अपने आप से है। पित्ज़ा और पराँठे का मुक़ाबला हो ही नहीं सकता।"

इन सबके बावजूद पराँठे वाली गली के पराँठा दुकान मालिकों को अपनी दुकानों के भविष्य की चिंता है। नई पीढ़ी के उनके बच्चे अब पढ़-लिख चुके हैं। वे नए पेशों में आना चाहते हैं जैसे कि इंजीनियरिंग, डाक्टरी इत्यादि। रमेशचंद शर्मा भावुक होकर कहते हैं, "ये दुकान मेरी माँ है, मेरा मोह है। मेरी ममता इसी से है और किसी से नहीं। कोई-न-कोई तो इसे चलाएगा ही और बाप-दादाओं की विरासत को आगे ले जाएगा।" बदलते स्वाद और स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता के चलते इस गली का आकर्षण भले ही कम हुआ हो लेकिन उत्सुकता अभी भी कायम है। इन गलियों की परंपरा और इनके चाहने वालों के कारण यह गली अभी भी ज़िंदा है।

कृपया प्रश्न 12 से 15 तक के उत्तर सही या ग़लत के कोष्ठक में ✓ का निशान लगाकर दीजिए। यदि वाक्य ग़लत है तो उसे पाठांश के आधार पर ठीक कीजिए।

	सही	ग़लत
उदाहरण – चांदनी चौक की संकरी गलियों की पहचान एक समान है।	☐	✓

औचित्य – हरेक संकरी गली अपनी ख़ास पहचान लिए है।

....

	सही	ग़लत
12 परांठेवाली गली भारत में ही मशहूर है।	☐	☐

....

	सही	ग़लत
13 परांठे खाते मशहूर नेताओं की तस्वीरें इन दुकानों का महत्व दर्शाती हैं।	☐	☐

....

	सही	ग़लत
14 वरूण जैन मानते हैं कि पाँच सितारा होटल के खाने का स्वाद परांठेवाली गली से बेहतर है।	☐	☐

....

	सही	ग़लत
15 श्रुति मानती हैं कि पित्ज़ा और बर्गर परांठेवाली गली की लोकप्रियता के लिए ख़तरा है।	☐	☐

....

अब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

16 रमेश चंद्र शर्मा की दृष्टि में वास्तविक मुकाबला किस से है?

.... [1]

17 क्यों पराँठा दुकान मलिकों के बच्चे इस व्यवसाय में नहीं आना चाहते?

.... [1]

18 रमेश चंद्र शर्मा अपनी दुकान को किस रूप में देखते हैं?

.... [1]

[अंक:10]

© UCLES 2013

अभ्यास 6 प्रश्न 19

क्यों मुझे यह फिल्म विशेष रूप से पसंद आई या पसंद नहीं आई?

पिछले हफ़्ते आपने एक फिल्म देखी। आप स्कूल पत्रिका के लिए इस फिल्म की समीक्षा लिखना चाहते हैं। ताकि आप फिल्म के विभिन्न पक्षों से अपने साथियों को परिचित करवाएं और बताएं कि क्यों यह फिल्म देखनी चाहिए या क्यों नहीं देखनी चाहिए।

आपकी समीक्षा 150 से 200 शब्दों से अधिक नहीं होनी चाहिए।

लिखित समीक्षा पर अंर्तवस्तु के लिए 10 अंकों तक और सटीक भाषा के लिए भी 10 अंकों तक दिए जाएंगे।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

© UCLES 2013

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

[अंक: 20]

© UCLES 2013

BLANK PAGE

© UCLES 2013

BLANK PAGE

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

University of Cambridge International Examinations is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which is itself a department of the University of Cambridge.